ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Special Issue | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2021, Special Issue

अतिथि संपादाक :

१. डॉ. भगवान कदम

२. डॉ. शिवशेट्टे गोविंद

३. डॉ. राठोड अनिलकुमार

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. वारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) नारी शिक्षा के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के विचारों का विश्लेषण
डा. श्रीमती रीना थामस, जबलपुर (म.प्र.) ||99

28) ''स्त्री'' विमर्श एक अवलोकन
प्रा. डॉ. रेखा मुळे, जि. बीड ||103

29) हिंदी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप
डॉ रेशमा अंसारी, रायपुर, छत्तीसगढ़ ||106

30) ब्रज के लोक गीतों में नारी की स्थिति
डॉ. रौबी, नई दिल्ली ||108

31) विवेकी राय की कहानियों में अभिव्यक्त ग्रामीण स्त्री जीवन का यथार्थ
डॉ. सचिन सदाशिव शिंगाडे ||111

32) समकालीन परिदृश्य में उपभोक्तावाद विज्ञापन और नारी की भूमिका
सपना कुमारी राय & डॉ रेखा दुबे, छत्तीसगढ़ ||114

33) कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री विमर्श
शाहिद हुसैन, बिलासपुर (छ.ग.) ||117

34) समकालीन लेखिकाओं के चुने हुए उपन्यासों में नारी अस्मिता की तलाश
Dr.Shobhana Kokkadan, Coimbatore, Tamil Nadu ||121

35) समकालीन आक्रोश उपन्यासमें स्त्री सशक्तिकरण
प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड, जुले सोलापुर, महाराष्ट्र ||125

36) स्त्री अस्मिता, मीडिया और बाजार
श्रीमती सुशीला यादव, जिला — महेन्द्रगढ, (हरियाणा) ||128

37) स्त्री की वास्तविक मुक्ति का प्रश्न
विक्रम सिंह बारैठ, अलवर (राज.) ||131

38) उषा प्रियवदां की कहानियाँ और आधुनिक स्त्री
प्रा.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण, जि. बीड ||134

39) स्त्री की आवाज : दलित साहित्य एक विश्लेषण
डॉ. अशोक बैरागी 'एबी', गरोठ (म.प्र.) ||136

40) हिन्दी दलित कहानियों में फुले अम्बेडकर वैचारिकी
बुद्धिराम, नई दिल्ली ||140

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

संकलन—कृष्णदत्त पालीवाल, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन संस्करण २०१४ नई दिल्ली (प्रकाशकीय से),

२. वही, पृ.सं. १६

३. स्त्री मेरे भीतर—पवन करण, राजकमल प्रकाशन, संस्करण २०१२पृ.सं. ८९.९०

४. नारी विमर्श की भारतीय परम्परा—सम्पादन संकलन, कृष्णदत्त पालीवाल, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन संस्करण २०१४, पृ.सं. २३३

५. साहित्य में अनामंत्रित—अभय कुमार दुबे, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन संस्करण २०१८ पृ. सं. २८४

❑❑❑

38

उषा प्रियवदां की कहानियाँ और आधुनिक स्त्री

प्रा.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण
कला व विज्ञान महाविद्यालय, गढी,
तहसिल— गेवराई, जि. बीड

****

हिंदी साहित्य के गद्य विधाओं के क्षेत्र में उन्नीसवीं सदी में एक नयी विधा का विकास हुआ जिसे कहानी के नाम से पहचाना जाता है । कहानी यह एक हिंदी साहित्य की लोकप्रिय विधा है । कहानियों में कहानीकार समाज में जो घटनाएँ घटती हैं उसका यथार्थ स्वरूप अपनी कहानियों के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास करता है । १९५० के आसपास नयी युगीन परिस्थितियों के अनुसार सामाजिक कहानियों का जन्म हुआ । उसमें परिवर्तित परिवेश में व्यक्ति और समाज का संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया है ।

आज समाज में प्रत्येक समाज की अपनी विशेषता होती है । इस विशेषता के बलबूते पर वह समाज अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने में सफल होता है । समकालीन कहानियों में विचार के स्थान पर भोगा हुआ सामाजिक यथार्थ ही अधिक व्यक्त हुआ है क्योंकि कहानीकार समाज के विविध वर्गो, जातियों, समुदायों और धर्मो से संबंधित होते हैं, इसलिए इनके अनुभवों में भिन्नता होती है । आधुनिक हिंदी कहानी के स्वरूप के विकास में आधुनिक जीवन प्रवृत्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है । प्रत्येक समाज में उस समाज की स्थिति उस समाज में प्रचलित मान्यताओं, आदर्शों, मूल्यों के अनुसार निश्चित होती है । सन् १९५० के बाद की कहानियों में जीवित परिवेश में साँस लेते

व्यक्ति और व्यक्तित्व को बनाने और ढालने वाले सूत्रों की खोज ही अधिक दिखाई देती है । हिंदी साहित्य में स्त्री लेखन की शुरुआत पहले कविता से हुई । जिसका मूल स्वर व्यक्ति और राष्ट्रीय भावना से युक्त था । ५० के बाद हिंदी कविता में व्यक्त संवेदनाओं की अपेक्षा स्त्री संवेदनाओं का चित्रण कथा–साहित्य में अधिक दिखाई देता है ।

हिंदी सहित्य के इतिहास में इक्कीसवीं सदी के जीन शीर्षस्थ लेखिकाओं का उल्लेख किया जाता है उनमें मन्नु भंडारी, कृष्णा सोबती, चित्रा मुदगल, उषा प्रियवंदा, शशि प्रभा, ममता कालिया, अलका सरावगी, नाशिरा शर्मा, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा, गीतांजलि श्री, मृणाल पाण्डेय आदि उल्लेखनीय हैं । समकालीन कहानीकारों ने स्त्री जीवन की समस्याओं को उजागर करने का भरसक प्रयास किया है ।

हिंदी साहित्य के इतिहास में इक्कीसवीं सदी के जीन शीर्षस्थ स्त्री लेखिकाओं का उल्लेख किया जाता है उनमें उषा प्रियवंदा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है । उषा प्रियवंदा का जीवन बहुआयामी है । उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन की अलग–अलग समस्याओं को उदघाटित किया है । उनकी अधिकतर कहानियों के केंद्र में स्त्री है । प्रत्येक समाज में स्त्री की स्थिति उस समाज में प्रचलित मान्यताओं, आदर्शों तथा मूल्यों के अनुसार निश्चित होती है । समाज की अधिकांश मान्यताएँ पुरुष द्वारा निर्मित होने के कारण नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया । आज की स्त्री उलझन, विषमता, अकेलापन, कुंठाग्रस्त जीवन, असंगति तथा अनिश्चय की मानसिकता से ग्रसित है । यह आधुनिक मानसिकता उषा प्रियवंदा की कहानियों द्वारा बहुत स्वाभाविक रूप से व्यक्त हुई है । उनकी अनेक कहानियों में पारिवारिक विघटन एवं मध्यवर्ग के यथार्थ के अनेक मार्मिक चित्र प्रस्तुत हुए दिखाई देते हैं । उषा प्रियवंदा की कहानियों में अकेलापन देखने को मिलता है वह अकेलापन व्यक्ति का अकेलापन नहीं है वह तो समाज के बीच में रहकर अकेले होने का अहसास है । 'चाँदनी में बर्फ पर' कहानी में हेम विदेश जाने के बाद मेरी से शादी करता है । मेरी मूलत: विदेशी है । मेरी शादी के बाद भी अपने मित्र के साथ मिल–जुल कर रहती है । हेम को यह अच्छा नहीं लगता । वह मेरी के लिए अपने परिवार को त्यागकर विदेश आता है । विदेश आन के बाद वह स्वयं को अकेला महसूस करता है । अब वह नितांत अकेला है । उसकी मीरा–सी पत्नी है, ठीक लेक के किनारे मँहगा अपार्टमेंट है, नौकरी, प्रतिष्ठा पर हेम के लिए यह जीवन कितना अलोना हो आया है । उपर्युक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आज का मनुष्य समग्र भौतिक सुख–सुविधाओं के बावजूद अकेलेपन के संत्रास को झेलने के लिए अभिशप्त है । आज की आधुनिक स्त्री पारंपारिक मूल्यों को अस्वीकार करते हुए अपना जीवन मुक्त रूप से व्यतीत करने पर अधिक बल देती है।

उषा प्रियवंदा की कहानियों में आधुनिक प्रेम पर आधारित स्त्री–पुरुष संबंधों का यथार्थ विशेष रूप से दिखाई देता है । उन्होंने विवाहपूर्व प्रेम के साथ–साथ विवाहोत्तर प्रेम को भी दिखाया है । 'कितना बड़ा झूठ' इस कहानी की किरण विवाहित है और नौकरी करती है । किरण को मैक्स से प्रेम हो जाता है । किरण का पति विश्वेश्वर इस प्रेम से अनजान है । कुछ दिनों की छुट्टी के बाद घर लौटने पर किरण को पता चलता है कि मैक्स का विवाह वारिया से हो गया है । तब वह भीतर से टूट जाती है । उसकी मनस्थिति का वर्णन लेखिका ने किया है । एकाएक उसने चाहा कि वह चीखकर रो पड़े वैसे ही जैसे पति की आर्थी उठते हुए देख सद्य: विधवा रो उठती है । यहां प्रेम में दुराव का अनुभव नायिका को होते हुए दिखाई देता है । प्रेम की असफलता का चित्रण इस कहानी में है ।

उषा प्रियवंदाजी ने अपनी कहानियों में टूटती और बिखरती नारी को उजागर करने का प्रयास किया । समाज की विसंगतियों का उन्होंने यथार्थ चित्रण किया है । उन्होंने स्त्री के प्रति समाज के यथार्थ रूपी

सच को दिखाने का प्रयास सफलतापूर्वक किया है । उनकी कहानियों में आधुनिक प्रेम पर आधारित स्त्री–पुरुष संबंधों में निराशा, आधुनिक जीवन में व्याप्त मूल्यों का विघटन संयुक्त परिवार का टूटन संबंधों में उदासीनता प्राचीन परंपराओं का विरोध, नैतिकता के बंधनों का त्याग तथा नए उभरते मानवीय संबंध आदि आधुनिक प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं ।

'मछलियां' कहानी में विजी और मनिष के संबंधों का चित्रण किया गया है । मनिष के आग्रह पर विजी अपना घर छोड़कर विदेश आती है । लेकिन मनिष को विजी से जो अपेक्षाएं होती हैं वह पूरी न होने के कारण दोनों का संबंध टूटता है । विजी बहुत सीधी–सरल लड़की है । दूसरी तरफ वह परिवार त्यागकर मनिष के लिए न्यूयार्क आने पर उसका पारिवारिक जीवन टूटता है । पिता–पुत्री का संबंध, भाई–बहन का रिश्ता सब कुछ टूट जाता है । विजी के कथन में इतना लड़–भीड़ कर इतने गर्व के साथ चली आयी थी । ये किस मुख से लिखती, कि शादी टूट गयी, मनिष का जी मुझसे भर गया है । इस तरह विजी के अपने परिवार से संबंध टूट जाते है और मनिष का संबंध भी क्षणिक बनकर रह जाता है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उषा प्रियवंदा की कहानियों में आधुनिक स्त्री बहुत मजबूती से परिपक्व रूप में उभरकर आयी है । उनकी कहानियों में आधुनिक स्त्री के हर एक रूप का चित्रण हुआ है । उन्होंने देशी–विदेशी परिवेश में मानवीय रिश्तों में आधुनिक युगीन परिवेश में आया हुआ बदलाव, अजनबीपन,अकेलापन, स्त्री–पुरुष सबंधों में आए परिवर्तन आदि स्थितियों का अत्यंत सूक्ष्मता और संवेदना के साथ चित्रण किया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. एक कोई दूसरा, उषा प्रियवंदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण २०००

२. कितना बड़ा झूठ, उषा प्रियवंदा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण १९७६

39

स्त्री की आवाज : दलित साहित्य एक विश्लेषण

डॉ. अशोक बैरागी 'एबी'
सहा. प्राध्यापक (हिन्दी विभाग),
श्री शिवनारायण उदिया शासकीय महाविद्यालय
गरोठ (म.प्र.)

****

सारांश

ग्रामीण समाज का ढॉचा ही ऐसा है कि, दलितों की औरतों का यौन – शोषण करना तो जमीदारों, ठाकुरों का एकाधिकार बन गया है। कोई भी दलित इन दानवों के विरूद्ध आवाज नहीं उठाता है मगर किसी ने उठाई भी तो उसे मौत की नींद सुला दिया गया। यहीं बात कहानी 'उसके जख्म' की कमला के साथ हुई। कमला ने जमींदार के खिलाफ दरवाजा खटखटाने की जुर्रत की थी। ऐसी जुर्रत पांडरपुर के किसी भी दलित ने नहीं की थी। बिरमी ने शोर मचाया जमींदार की करतुत को जग जाहिर करने की हिम्मत की थी अगले ही दिन उसकी लाश खेत में पड़ी मिली थी। कमला यह सब जानती है फिर भी बलात्कारी के खिलाफ अदालत में जाने का निर्णय लेती है...

हिन्दी में दलित साहित्य की अवधारणा, अवधारणा के रूप में भले ही बाद में आई हो किंतु इसके बीज मध्यकाल में तब से दिखाई देते है, जब इस्लाम का आगमन हुआ और उन्होने समता, स्वतंत्रता तथा भाईचारे के दशष्टिकोण को अपनाया। उनके इस दृष्टिकोण से दलित वर्ग आकर्षित होकर उनके धर्म को भी स्वीकार करने लगा और जो लोग हिन्दू धर्म में रह